Gaatha, Vol.-2; Issue-1 (Jan.-June) 2025 : PP-38-41

गाथा (GAATHA)

स्त्री अस्मिता और विमर्श की सहकर्मी-समीक्षित, अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका

ISSN : 3049-3463(Online)

Vol.-2; Issue-1 (Jan.-June) 2025

Page No.- 38-41

©2025 Gaatha

https://gaatha.net.in

Author's :

राज श्री

हिंदी शोधार्थी,

पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना.

डॉ. चित्रलेखा

शोध निर्देशक,

एसोसिएट प्रोफेसर,

बी.एस. कालेज दानापुर, पटना.

Corresponding Author :

राज श्री

हिंदी शोधार्थी,

पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना.

स्त्री आत्मकथा लेखन की परंपरा में स्त्री लेखिकाओं का योगदान

जब हम आत्मकथा लेखन की परंपरा पर विचार करते हैं तो यह स्पष्ट होता है कि संस्कृत साहित्य में आत्मकथा के बीज तत्व मौजूद है। कठोपनिषद में ऐसी सूक्ति का प्रयोग किया गया है जिससे आत्मकथा का आंशिक बोध होता है- "कश्चिदधीर प्रत्यगात्मान मैक्षत।"[1] इसका अर्थ यह है कि कोई बिरले ही ऐसे धीर पुरुष होते हैं जो आत्म- समीक्षण की ओर प्रवृत्त होते हैं। मनु ने आत्म निरीक्षण को स्पष्ट करते हुए लिखा है- "आत्मैव हयात्मनः साक्षी गतिरात्मा तथात्मनः।

मावमंस्था स्वभात्मानं नृणां साक्षिणमुत्तमम।"[2]

श्रीमद् भागवत गीता में आत्म तत्व के महत्व को रेखांकित करते हुए स्पष्ट किया गया है-

"उद्धरेदात्मनात्मानं ,नात्मानमव सादयेत।

आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।"[3]

इस पंक्ति का भाव यह है कि प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह अपनी आत्मा का उद्धार करें। आत्मा को कभी निरादृत नहीं करें क्योंकि आत्मा ही शत्रु अथवा मित्र दोनों रूपों में है। हमारे जितने प्राचीन भारतीय मनीषी थे उन लोगों ने भौतिक जीवन को महत्व नहीं दिया। वे आध्यात्मिक जीवन पर बल दिया करते थे। आत्मकथा में मुख्य रूप से भौतिक जीवन में भोगा गया यथार्थ का चित्रण मिलता है। आध्यात्मिक और दार्शनिक मांनदडों पर अनेक लोग जीवन यापन करते रहे हैं। उन लोगों ने अपने संबंध में आत्म परिचय नहीं दिया। स्पष्ट है संस्कृत काल में आत्मकथा लेखन की कोई परंपरा नहीं मिलती। उन

रचनाकारों ने अपने बारे में कभी भी खुलकर नहीं बताया। महाकवि कालिदास के जीवन के संबंध में रामचंद्र चौधरी ने लिखा है- "जिस कवि की प्रतिभा कौमुदी विश्व साहित्य में सर्वोत्कृष्ठ रुप से उद्भासित, हो सकी उसने अपने जीवन वृत्त के संबंध में जरा भी आभास नहीं दिया है। भारतीय मनुष्यों की ऐसी परंपरा रही है कि वे अपनी प्रतिभा ही जगत में बिखर कर चले जाते हैं और अपने भौतिक जीवन संबंधी बातों को तुच्छ मानकर अपनी अवहेलना कर देते हैं, अथवा उनके संबंध में कुछ भी व्यक्त नहीं करते हैं। कालिदास से पूर्व ही यह परंपरा चली आ रही है। महाभारत कार वेदव्यास के भौतिक अस्तित्व का निरुपण आज भी अनुसंधान का विषय बना हुआ है।"[4] संस्कृत काल के कुछ कवियों ने धीरे-धीरे अपना वंश, नाम राजश्रय आदि का सांकेतिक भाषा में प्रयोग किया, लेकिन अपने जीवन वृत्त की घटनाओं को व्यक्त नहीं किया।" 'उत्तर रामचरित' की प्रस्तावना में भवभूति का संक्षिप्त परिचय निम्नांकित रुप में लिखा गया है-

"अिस्त खलु तत्रभवान काश्यपः
श्रीकष्णपदलाछनःपदवाक्य प्रमाणज्ञो भवभूतिर्नाम-जतुकर्णी पुत्रः।
यं ब्राह्मणमियं देवी वाग्वश्येवानुवत्तते।
उत्तरराम चरितं तत्प्रणीत प्रवोक्ष्यते।।

अर्थात आप लोग यह जानिए कि कश्यप गोत्र में उत्पन्न, व्याकरण, मीमांसा और न्याय शास्त्र जानने वाले, जतुकर्णी के पुत्र और भवभूति ऐसी उपाधि से युक्त श्रीकंठ नाम के विद्वान हैं। जिन भभूति का देवी सरस्वती वशवर्तिनी की तरह अनुसरण करती है, उन्हीं भवभुति के द्वारा निर्मित, 'उत्तर रामचरित' का अभिनय किया जाता है।"[5] संस्कृत के महाकवि हर्ष ने नैषधीय चरित, नामक अपने काव्य में अपना नाम, अपने माता-पिता एवं आश्रय दाता का उल्लेख किया है। उन्होंने लिखा है-"तांबूल द्वयमासनं च लभते यः कान्यकुब्जेश्वरात"।[6] महाकवि बाणभट्ट ने भी हर्ष चरित में वंश, जाति एवं आश्रय दाता का उल्लेख किया है। निष्कर्ष के रुप में यह कहा जा सकता है कि वैदिक काल और संस्कृत काल में आत्मकथा लेखन की कोई समृद्ध परंपरा नहीं मिलती।

पाली भाषा में बौद्ध साहित्य लिखा गया है। उनके यहां अनेक महत्वपूर्ण रचनाएं की गई, जिसमें आध्यात्मिक उन्नति के लिए बौद्ध-भिक्षु एवं भिक्षुणियां अपना विचार व्यक्त करती रही हैं लेकिन यहां भी भौतिक जीवन की बात बहुत कम देखी गई । अपभ्रंश काल में मुख्य रुप से जैन धर्म पर आधारित सहित्य लिखा गया। यहां भी बहुत संक्षिप्त रुप में कुछ रचनाकारों ने आत्म परिचय दिया। पुष्पदत लिखित 'णायकुमार चरिउ' स्वयंभू रचित 'पउम चरिउ' एव धनपाल लिखित 'भविसयद्त्त कहा' में संक्षिप्त रुप में आत्म परिचय दिया गया है। इसी काल के कवि 'चंदवरदाई ने 'पृथ्वीराज रासो' नामक अपने महाकाव्य में अपने अंतिम जीवन का संक्षिप्त वर्णन किया है। भक्ति काल के कवि कबीर, सूर, तुलसी इन तीनों ने अपने बारे में कुछ भी नहीं लिखा। वे अपनी रचनाओं में अपना विनय, दैन्य एवं अपने को तुच्छ होने का एहसास करते रहे। सूफी कवि जायसी ने अपने बारे में स्पष्ट रुप से लिखा है-" "जायस नगर मोर स्थानू"" ऐसा कहकर उन्होंने अपने जन्म स्थान के साथ तत्कालीन शासकों का व्योरा प्रस्तुत किया है लेकिन इसकी भी गणना आत्म कथा लेखन की परंपरा में नहीं की जा सकती। भारत में जब मुसलमानो का शासन प्रारंभ हुआ, तो उन शासकों ने अपनी शासन व्यवस्था, राज्य विस्तार और अपनी उपलब्धियां को गिनवाते हुए उर्दू- फारसी के अतिरिक्त तत्कालीन भाषा में रचनाएं लिखवाई, लेकिन उनमें कई ऐसी रचनाएं हैं जिसका हिंदी अनुवाद नहीं किया जा सका है।

स्पष्ट है यह काल भी आत्मकथा लेखन की परंपरा के रूप में महत्वपूर्ण नहीं माना जा सकता। रीतिकाल में

गुरु गोविंद द्वारा 'विचित्र नाटक लिखा गया, जिसमें राणा प्रताप, शिवाजी और गुरु गोविंद सिंह के शौर्य पराक्रम सहित उनके विशिष्ट गुणों का विवेचन किया गया है। 1641 ईस्वी में जैन कवि बनारसी दास ने ब्रजभाषा में 'अर्द्ध कथानक' नामक आत्मकथा लिखकर आत्मकथा लेखन की परंपरा में नीव डालने का काम किया। तुजुक बावरी और जिक्रे मीर, नामक आत्मकथा का अनुवाद बहुत बाद में किया गया। स्पष्ट है अब तक आत्मकथा विषयक कोई महत्वपूर्ण रचना उपलब्ध नहीं होती। इस तरह छिटफुट रूप में आत्मकथा के कुछ तत्व अवश्य मिल जाते थे जिसमें आत्मचरित्र का बोध होता था।

हिंदी में अनेक समाज सुधारकों, इसाई मिशनरियों, महात्मा गांधी, राष्ट्र के लिए समर्पित भारतीय सपूतों से लेकर कई विचारधाराओं के लोगों ने आत्मकथाएं लिखीं, लेकिन स्त्री आत्मकथा लेखन का यहाँ भी अभाव ही रहा।

जानकी देवी बजाज एक ऐसी महिला थीं जिनके ऊपर गांधी दर्शन एव राष्ट्र प्रेम का प्रभाव पड़ा था। यही कारण है कि उनके द्वारा लिखित 'मेरी जीवन यात्रा' नामक आत्मकथा में गांधीवादी दर्शन और राष्ट्र प्रेम को प्रमुखता से स्थान दिया गया है। शिवरानी देवी ने प्रेमचंद के साथ रहते हुए जैसा महसूस किया था उस अनुभव को उन्होंने 'प्रेमचंद के घर में' नामक छोटी सी आत्मकथा लिकर प्रेमचंद से जुड़ी यादों को गिनाने का काम किया है। हंसा वाडेकर एक फिल्म अभिनेत्री थी। उन्होंने फिल्म में रहकर अभिनेताओं के संबंध में जैसा महसूस किया था उसके संबंध में 'अभिनेत्री की आपबीती' नामक आत्मकथा लिखी है जिसमें लड़कियों को फिल्म में आने से मना करते हुए लिखा-" "उन कमसिन लड़कियों को देखकर मेरा मन परेशान हो जाता था। मैं साफ-साफ कह देती हूं अगर अपनी लाडली बेटी का हित चाहते हो, तो इस लाइन में भूलकर भी मत डालो। यह सब मेरा अनुभव है। इस सत्य के पीछे मेरा दावा है कि कोई सती-सावित्री भी इस लाइन में आकर जैसी थी वैसी नहीं रह सकती।"[7]

आधुनिक काल में गद्य की कई विधाओं में लेखन की परंपरा का सूत्रपात हुआ। इस काल में अनेक स्त्रियों ने आत्मकथा लिखकर अपने जीवन के भोगे गए यथार्थ को सामने रखा। इस युग का ऐसा प्रभाव पड़ा कि स्त्रियों ने जीवन जगत के कई क्षेत्रों में न केवल अपना स्थान बनाया, बल्कि कई क्षेत्र में उनकी भूमिका अग्रगण्य रूप में पहचानी जाने लगी। यह तो उनके पराक्रम और विशेषता की बात रही। वेबाकी से इन स्त्रियों ने अपने जीवन के कई छुए- अनुछए पक्षों को आत्मकथा लिखकर अपने बारे में वह सब कुछ बता दिया जो उनके भीतर कसक बनकर टीस पैदा कर रही थी। आत्मकथा लेखन के क्षेत्र में सवर्ण एवं दलित महिलाओं ने बढ़- चढ़कर हिस्सा लिया और एक तरह से आधुनिक युग में अपने लेखन से आत्मकथा विधा को काफी समृद्ध किया है । अनीता राकेश मोहन राकेश की पत्नी हैं। उन्होंने मोहन राकेश के साथ जुड़ी कई घटनाओं को धारावाहिक रूप में 'चंद संतरे और' शीर्षक से लिखा, जिसका प्रकाशन 'सारिका' पत्रिका में धारावाहिक रूप से होता रहा। इसके अंतर्गत उन्होंने मोहन राकेश के साथ बिताए गए उन एहसासों का विवेचन किया है। इसके साथ ही मोहन राकेश के व्यक्तित्व को भी निशाना बनाते हुए उन्होंने लिखा है-" "दिन भर का हुल्लड जिसमें नौजवान जोड़ों का पीछा करना, सड़कों पर सीटियां बजाना, कोका-कोला मुंह में भरकर कुल्ला करना, पिक्चर में अपने पड़ोसी का पॉपकॉर्न बांटना भी शामिल था और अब सब धुल चुका था। कुछ अजीब- सी मेरी आदत हो गई थी कि जब भी जितनी भी आजादी मिलती, उसका बुरे से बुरा उपयोग करती, लेकिन मां के कोई सौ गज भी पास आ जाने पर सब हवा हो जाता था।"[8] मोहन राकेश ने अपने जीवन में कई औरतों से प्रेम किया और वे उन सब को छोड़ते भी गए। अनीता राकेश ने जब इनके साथ रहना शुरु किया तो उन्होंने मोहन राकेश की मनोवृत्ति को समझ

लिया था। मोहन राकेश की मनोवृत्ति को स्पष्ट करते हुए इन्होंने लिखा है-"तूने मेरा रिकॉर्ड खराब कर दिया है। दो साल से ज्यादा मैं किसी औरत के साथ नहीं रहा। पहले मैंने सोचा कि दो-तीन साल के बाद चली जाएगी, लेकिन छः साल हो गए, तेरे जाने के कोई आसार ही नजर नहीं आ रहे।"[9]

निष्कर्ष :

कुल मिलाकर, स्त्री आत्मकथा लेखन की परंपरा से हम भारतीय समाज की नब्ज टटोल सकते हैं, उसकी भाव भूमि में पहुंच सकते हैं कि कैसी स्थितियां पैदा हुई, जिसके कारण ऐसी आत्मकथाएं हिंदी साहित्य में लिखी गई। दलित और गैर दलित इन दोनों कोटि की स्त्रियों ने आत्मकथा लेखन का कार्य किया है। दोनों की अलग-अलग पृष्ठभूमि है। जो गैर दलित हैं, उनके ऊपर सामाजिक दबाव बहुत कम है। क्योंकि वे साधन संपन्न हैं, इसके अतिरिक्त जातीयता से लेकर और किसी तरह का दबाव उन्हें नहीं झेलना पड़ा है। लेकिन जो दलित महिला आत्मकथा लेखिकाएं हैं उनके साथ समाज का भेदभाव भी है। सवर्ण उन्हें उपेक्षित और हेय दृष्टि से देखते हैं। इसके अलावा उनको कोई महत्व नहीं देता। परिवार में भी उनकी स्थिति ऐसी होती है जहां कोई महत्व नहीं दिया जाता। शैक्षिक संस्थानों में भी ये जहां-जहां गई हैं, वहां भी इन्हें भेदभाव का शिकार होना पड़ा है। कुल मिलाकर दलित आत्मकथा लेखिकाओं की स्थिति अलग है जिसे उन्होंने अपनी आत्मकथाओं में व्यक्त किया है।

संदर्भ- सूची :

1. कठोपनिषद- 9- 1.
2. मनुस्मृति अध्याय- 8 शोक- 41.
3. श्रीमद् भागवत गीता- अध्याय- 6 शोक- 5.
4. पूर्व मेघ- कालिदास संपादक श्री रामचंद्र चौधरी- भूमिका.
5. उत्तरसीता चरित- भवभूति- प्रथम अंक- पृष्ठ संख्या- 5.
6. हर्ष चरितम- श्रीहर्ष- सर्ग 22 श्लोक- 153.
7. दैनिक वीर प्रताप- 23 जुलाई 1975 पृष्ठ संख्या- 8.
8. चंद सतरे और- अनीता राकेश- पृष्ठ संख्या- 38.
9. चंद सतरे और- अनीता राकेश- पृष्ठ संख्या- 39.

•